

نمبر ۱۲۰۰

ماہنامہ شعاع کلمہ

قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى
فَقَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ
يَهْدِي اللَّهُ لِنُورٍ مَخْرُوجٍ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيكُمْ

ہماچل



مؤسسہ نور ہدایت حسینیہ غفران مآب لکھنؤ

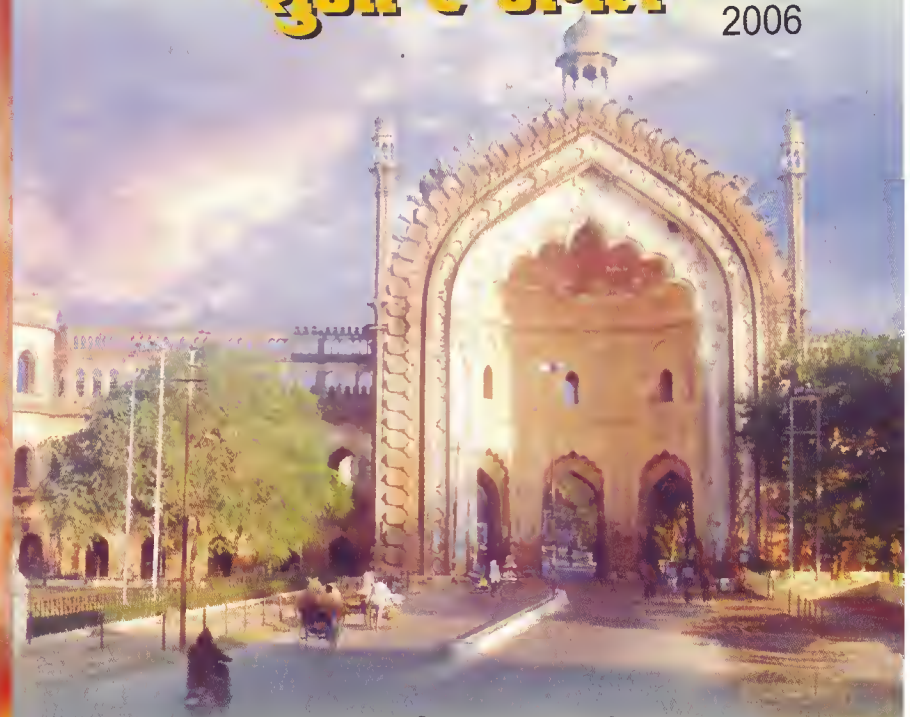
R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल November
2006



हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका
लखनऊ



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufuran Maab, Chowk

LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA

Phone : 2252230

वर्ष—3

R.N.I. No. UPBIL/2004/I3526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक 5

माह नवम्बर — 2006 लखनऊ
नूर—ए—हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
“लखनऊ”

संरक्षक
मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहिब
सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी ‘असीफ़’ जायसी
उप—सम्पादक
हैदर अली

कार्यकारिणी बोर्ड
प्रोफेसर सै० अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफेसर सै० हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
मु० र० आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़हीब नगरौरी

वार्षिक — 200 रु

मिलने का पता

कीमत — 20 रु

नूर—ए—हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ — 3 (उ.प्र.) भारत फ़ोन न० 0522—2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निजामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी ‘असीफ़ जायसी’।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न०	मज़मून	लेखक	पेज न०
1-	इमाम जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम		
	आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यदुल उलमा सैय्यद अली नकी ताबा सराह		3
2-	इबादत व अख़लाक़		
	इमादुल उलमा अल्लामा सै मुहम्मद रज़ी साहब किब्ला		5
3-	एक सबक़ इस्लाम से		
	सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद साहब किब्ला ताबा सराह		7
4-	इमाम अली रिज़ा अलैहिस्सलाम		
	जनाब अब्दुल अली साहब		9
5-	इतिहास और इस्लाम में औरत की हैसियत		
	हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान		13
6-	मुख्य समाचार		
	इदारा		15

अक़्वाले इमामे अली रिज़ा अलैहिस्सलाम

- ☐ जब लोग नये-नये गुनाह करने लगेंगे तो ख़ुदावन्दे आलम उन्हें नई-नई बलाओं में गिरफ़्तार कर देगा।
- ☐ जो किसी ज़रूरतमन्द की ज़रूरत पूरी करे ख़ुदावन्दे आलम उसकी दुनिया और आख़िरत दोनों आसान कर देगा।
- ☐ बुरे कामों से बचना नेक कामों को अन्जाम देने से बेहतर है।
- ☐ नेक काम अन्जाम दो ताकि क़यामत के दिन नेक बदला मिले।

इमाम जाफ़रे सादिक (अ०)

आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यदुल उलमा सैय्यद अली नकी ताबा सराह

विलादत:- 17 रबीउलअव्वल 83 हिजरी

शहादत:- 15 शव्वाल 148 हिजरी

आपका दौर इंकिलाबी दौर था। वह बीज बनी उमैय्या से नफ़रत के जो हज़रत इमामे हुसैन (अ०) की शहादत ने दिलो दिमाग़ की ज़मीन में बो दिये थे अब पूरी तरह फल देने वाले हो रहे थे, उमवी तख़्ते सलतनत को ज़लज़ला था और उमवी ताक़त रोज़ बरोज़ कमज़ोर हो रही थी इस दौर में बार-बार ऐसे मौक़े आते थे जिनमें कोई जज़्बाती आदमी होता तो फौरन हवा के रुख़ पर चला जाता और इंकिलाब के वक्ती फाएदों से फाएदा उठाने के लिए खुद भी इंकिलाबी जमात के साथ जुड़ जाता। फिर जबकि इसी के साथ ऐसे असबाब भी मौक़े-मौक़े से पैदा होते थे। जो बनी उमैय्या के खिलाफ उसके जज़्बात को भड़काने वाले हों।

ज़ैद बिन अली बिन हुसैन (अ०) हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) के चचा थे खुद भी इल्म व तक़वे में एक बुलन्द शख़्सियत वाले थे। यह बनी उमैय्या के खिलाफ खड़े होते हैं और वह भी हज़रत इमामे हुसैन (अ०) के खून का बदला लेने के एलान के साथ। यह क्या ऐसा मौक़ा न था कि हज़रत इमामे जाफ़र सादिक भी चचा के साथ इस मुहिम में शरीक हो जाएँ। फिर इसके बाद ज़ैद (अ०) का शहीद किया जाना और उन पर वह जुल्म कि दफ़्न के बाद लाश को क़ब्र से निकाला गया और सर को काटने के बाद जिस्म बे सर को एक ज़माने तक सूली पर चढ़ाए रखा था फिर आग में जला दिया गया। इस के असर आम इन्सानी तबीयत में खलबली पैदा कर सकते हैं?

और फिर अब्बासियों के हाथ से इंकिलाब

की कामियाबी और सलतनते बनी उमैय्या की ईंट से ईंट बज जाना।

इस तमाम दौरे इंकिलाब में हर दिन नए-नए मामले और अलग-अलग नफ़सानी बातें हैं जो एक इंसान को मुतहर्रिक बनाने के लिए काफी हैं ख़ास तौर से इसलिए कि बनी अब्बास को हुकूमत की कुर्सी पर बिठाने वाला अबुसलमा ख़िलाल औलादे फातमा ज़हरा (स०) की मुहब्बत के साथ इतना मशहूर था कि इक़तेदार में आने के लिए इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) के पास तहरीरी गुज़ारिश भेजी मगर आप ने इससे न सिर्फ़ यह कि नज़र फेर ली बल्कि इस कागज़ को उस शमा की लौ के हवाले कर दिया जो उस वक़््त रौशन थी। और कासिद से फरमाया कि इस तहरीर का बस यही जवाब है और फिर इस पूरे लम्बे दौरे इंकिलाब में एक दिन ऐसा नहीं आया जो हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) में कोई हरकत पैदा कर सका हो। सिवाए उलूमे अहलेबैत (अ०) की हिफाज़त और फैलाव की उस मुहिम के जिसकी खुलकर शुरुआत आप के बुजुर्ग बाप ने कर दी थी। और अब इसी को अपनी लम्बी उम्र की निस्बत से और उस वक़््त के इंकिलाबी हालात के मौक़े से फाएदा उठाकर पूरे तौरसे फैलाने का मौक़ा हज़रत इमाम जाफ़र सादिक (अ०) को मिला। जिसके नतीजे में मज़हबे अहलेबैत अवाम में "मिल्लते जाफरी" के नाम से याद किया जाने लगा।

यह क्या था? यह वही जज़्बात से बुलन्द होने का क़तअी मुशाहेदा है जिसे "मेराजे इन्सानियत" की हैसियत से हम उनके तमाम पहले वाले बुजुर्गों में देखते रहे हैं।

बनी अब्बास के तख्ते सलतनत पर बैठने के बाद कुछ दिन तो औलादे रसूल (स0) को सुकून रहा मगर मन्सूर दवानेकी के तख्ते सलतनत पर बैठते ही फिर फिजा खराब हो गई और चूँकि यकीन था कि बनी उमैय्या को जो हमने शिकस्त दी है वह औलादे फातिमा (स0) के साथ हमदर्दी ही से फाएदा उठाकर। इसलिए यह अन्देशा था कि न जाने कब अवाम की आँखें खुल जाएँ और वह उसी तरह झुक जाएँ। खासकर इसलिए कि बनी उमैय्या के ज़वाल के आसार सामने आने के बाद जब बनी हाशिम ने मदीने में जमा होकर एक मजिलसे मुशाविरत की कि इंकिलाब के पूरा होने के बाद तख्ते सलतनत किसके हवाले दिया जाए तो सबने हसने मुसन्ना इमामे हसन के बेटे के पोते मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह को इस मनसब का अहल करार दिया था और सबने उनके हाथ पर बैअत की थी। इस जलसे में मन्सूर भी मौजूद था और उसने भी मुहम्मद के हाथों पर बैअत की थी इसके बाद सियासी तरकीबों से इस कारवाई को बेकार करके बनी अब्बास तख्ते ख़िलाफत पर काबिज़ हो गए इसलिए बहुत बड़ा काँटा जो मन्सूर के दिल और आँख में खटक रहा था वह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह का वजूद था इसका नतीजा यह था कि इक़तेदार में आने के बाद खास तौर से औलादे इमामे हसन (अ0) के ख़िलाफ जुल्म व सितम शुरू कर दिया गया।

अब्दुल्लाह बिन हसन (अ0) जो अब्दुल्लाह अलमहज़ के नाम से मशहूर थे। इमामे जैनुलआबिदीन के भाँजे यानी फातिमा बिनते हुसैन (अ0) के बेटे थे और मुहम्मद उनके बेटे जो अपने तक़वे (परहेज़गारी) की बुनियाद पर नफ़से ज़क़िय्यः के नाम से मशहूर थे जनाबे फातिमा बिनते हुसैन के पोते थे।

मन्सूर ने तमाम सादाते हसनी को कैद कर दिया और खास तौर से अब्दुल्लाह अलमहज़ को बुढ़ापे की हालत में इतनी सख्ती व जुल्म के साथ

अकेले, तन्हाई में कैद किया कि अलहफ़ीज़ अलअमान।

ज़ाहिर है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ0) दिली तौर पर इन लोगों से ग़ैर मुताल्लिक न थे चुनानचे हुआ यह कि जिस दिन औलादे हसन (अ0) को ज़न्जीरों से बाँधकर गर्दन में तौक और पैरों में बेड़ियाँ पहना कर बे कजावा ऊँटों पर सवार करके मदीने से निकाला गया। और यह काफ़ेला इस हाल में मदीने की गलियों से गुज़रा तो इमाम जाफ़रे सादिक (अ0) इस मन्ज़र को देखकर बर्दाश्त न कर सके और चीखें मार-मार कर रोने लगे और इसके बाद 20 दिन तक सख्त बीमार रहे। अब्दुल्लाह के दोनों बेटे मुहम्मद और इब्राहीम कुछ दिन पहाड़ों की घाटियों में छुपे रहे फिर “मरता न तो करता क्या” के मिस्दाक़ एक जमात को अपने साथ लेकर मुकाबले के लिए तैयार हुए इस मौक़े पर यह वाक़ेआ याद रखने वाला है कि आम राय मुहम्मद के साथ इस हद तक महसूस हो रही थी कि इमामे अबुहनीफा और मालिक ने नफ़से ज़क़िय्यः की हिमायत और मदद के लिए फतवा दिया। मगर हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ0) अपनी खुदादाद बसीरत से बावजूद तमाम जज़्बाती तकाज़ों के इस मुहिम से अलग रहे। और आप ने अपने दामन को इस कशमकश से बिल्कुल बचाए रखा। आप जानते थे कि यह मुहिम वक्ती हालात की बिना पर मजबूरी के तौर पर शुरू की गई है जिसके पीछे पीछे कोई बुलन्द मक़सद नहीं है न इससे कोई नतीजा निकलने वाला है लेकिन मैंने अगर इसका किसी तरह भी साथ दिया तो इस तामीरी ख़िदमत का भी जो मैं मआरिफ़े आले रसूल (स0) की इशाअत के तौर पर अन्जाम दे रहा हूँ, दरवाज़ा बन्द हो जाएगा।

यह बेपनाह बर्दाश्त और सब्र ही है जो उनके बाप दादाओं में नज़र आ रहा था और वह आम इंसानों के बस की बात नहीं है।

□□□

इबादत व अख़लाक़

इमादुल उलमा अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहिब क़िल्ला

इताअत की शिद्दत का नाम इबादत है और इसका तअल्लुक आदमी की पूरी ज़िन्दगी पर पड़ना ज़रूरी है। रही रूहानी इबादतें तो वह इबादत के उस बड़े पैमाने का एक रौशन और ज़रूरी रुख़ हैं लेकिन उनका भी इंसान की सीरत, अख़लाक़ और उसकी अमली ज़िन्दगी से गहरा ताल्लुक होता है और मजमुअी हैसियत से इबादत को सीरत और अख़लाक़ से किसी तरह भी अलग नहीं किया जा सकता। इबादत के मर्तबे और दर्जे ही के मुताबिक़ इंसानी अख़लाक़ की क़द्रे बना करती हैं इसका लाज़मी नतीजा यह निकलता है कि अख़लाक़ियात की तश्कील में इबादत के तसव्वुर और उसके मेयार को बड़ा दख़ल है और अगर इबादत सही रास्ते पर न होगी तो सीरत व अख़लाक़ की तामीर भी सही तरीक़े पर नहीं हो सकती। इस्लाम ने इसी लिए इंसान को इबादत का सही मतलब बताकर उसके इस पहले फ़र्ज़ से आगाह कर दिया है कि वह सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करे और किसी सूरत में भी इस काम में उसके ग़ैर को शरीक न करे। इस फ़र्ज़ में भी इतनी गहराई है कि एक तौहीद परस्त और सच्चे मुसलमान के लिए अल्लाह के अलावा ऐसी कोई इताअत और फ़रमाँबरदारी मुमकिन नहीं रहती जो अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो और जिससे इबादत के इस मेयार में फ़र्क़ पैदा होता हो जो इस्लाम की बुनियादी तालीम है। यही वह एलान है जिसे हर मुसलमान अपनी हर नमाज़ में करता रहता है। ‘ऐ अल्लाह हम बस

तेरी ही इबादत करते हैं और तेरी ही मदद चाहते हैं।’ (सूरे हम्द) इस इलाही इबादत का तकाज़ा यह है कि मुसलमान अपनी सोच-समझ के तमाम धारों को सारी दुनिया से मोड़कर सिर्फ़ अल्लाह के रास्ते पर लगा दे और तौहीद के मरकज़ से जोड़े रखे। इसी में उसे दुनिया और आख़िरत की हर कामियाबी, फ़लाह, सरबुलन्दी और न मिटने वाली माददी (Material) और अख़लाकी ताक़त के सरचश्मे मिल जाएँगे।

लेकिन अगर वह इबादत के इस राज़ को न समझ सका और उसने इसकी मरकज़ी रूहानियत को टुकड़े-टुकड़े करके तौहीद के मक़सद को ठेस लगाई और इस तरह वहदहू ला शरीक अल्लाह की हाकिमियत और आला हुकूमत में उसके ग़ैर को शरीक बनाया तो फिर इसी के साथ उसका फ़िक़्री इख़्तेलाफ़ और नज़री अफ़रातफरी उसकी सीरत, किरदार और अख़लाक़ की तनज़ीम को भी टुकड़े-टुकड़े कर देगी और इंसान उन क़द्रे को हासिल न कर सकेगा जो उसकी ज़िन्दगी का इम्तियाज़ हैं और जिनके लिए उसे पैदा किया गया है। इस्लाम में इबादत की मरकज़ियत किसी तरह की तक्सीम और किसी तरह के भी शिर्क को क़बूल नहीं कर सकती वरना इसकी वह बुनियाद ही बाक़ी न रह सकेगी जिस पर उसका फ़ितरी और अख़लाकी निज़ाम टिका हुआ है। मैंने अर्ज़ किया है कि वह पूरी नज़रियाती और अमली ज़िन्दगी पर हावी और शामिल है, क्योंकि उसने जहाँ इंसान के

आज़ा व ज़वारेह के इस इस्तेमाल को इबादत कहा है जो खुदाई मर्ज़ी के मुताबिक हों वहा उसने फ़िक्र व नज़र को भी इबादत करार दिया है जो खुदा के मुकर्रर किये हुए रास्ते पर हो। यह बात सब ही जानते हैं कि इंसानी फ़िक्र और उसके नफसियात की बनावट इस तरह की है कि वह तरह-तरह के माहोल में ढल सकते हैं। आदमी की सोच का दायरा और उसके सोचने का तरीका आस-पास के हालात से मुतास्सिर हो सकता है और इसी लिए सारी दुनिया के इंसानों को फ़िक्र के एस धारे पर लाने की कोशिश की जाए तो इसमें कामियाबी हासिल करना आम सतह के इंसानों की ताकत से बाहर है। उसके लिए अगर यह बात मुमकिन हो सकती है तो सिर्फ़ इलाही मदरस-ए-फ़िक्र से, यानि दीन और सिर्फ़ दीन ही वह ज़रिया है जिसको ख़ित्ता, रंग, नस्ल, ख़ानदान, क़ौम और मुल्क या ज़बान के इख़्तेलाफ़ात अपनी पकड़ में लेकर शिकस्त नहीं दे सकते और यही वह बड़ी ताकत है जो हर ग़ैर मुअ्तदिल और हर ग़लत ख़याल को शिकस्त दे सकती है।

इस्लामी फ़िक्र खुद भी इबादत है और उसकी हर अमली शक्ल इबादत है और “इस्लामी अख़लाक़” इसी फ़िक्र की अमली सूरत का नाम है। इस तरह “इस्लामी अख़लाक़” का पाया जाना इस्लामी इबादत के ख़याल की तश्कील का एक लाज़मी हिस्सा है यानि अगरचे इबादत का मतलब अपनी जगह पर बहुत ऊँचा है लेकिन सीरत व अख़लाक़ को पूरा किये बिना इसका कोई फाएदा नहीं बाकी रह सकता। और अगर इस्लामी इबादत की क़द्रे मौजूद न हों तो फिर सीरत और किरदार की तश्कील इस्लामी ख़याल

के मुताबिक़ मुमकिन नहीं है।

एक बार कुरैश के कुछ बड़े सरदारों ने आँहज़रत (स0) की ख़िदमत में अर्ज़ की कि आईये हम और आप आपस में इस तरह समझौता कर लें कि एक साल तक आप हमारे माबूदों की परस्तिश करें फिर दूसरे साल हम आपके खुदा की इबादत करें इस तरह हम दोनों फ़रीकों को हर एक के दीन और मज़हब और तौर तरीके से फायदा हासिल होता रहेगा। आप (स0) ने जवाब दिया: अल्लाह की पनाह यह बात किस तरह मुमकिन हो सकती है कि मैं एक लमहे के लिए भी किसी ग़ैर को अल्लाह का साझी बनाऊँ और अल्लाह को छोड़कर उसकी इबादत करने लगूँ। इसी सिलसिले में सूरें काफ़िरून का नुज़ूल हुआ था जिसमें अल्लाह फरमाता है: ऐ रसूल कह दो कि ऐ काफ़िरों! मैं उन चीज़ों की इबादत नहीं करता हूँ जिनकी तुम इबादत करते हो और न तुम उस अल्लाह की इबादत करते हो जिसकी मैं इबादत करता हूँ।

और आख़िर में इरशाद होता है: तुम्हारे लिए तुम्हारा रास्ता है और मेरे लिए मेरा दीन है। यानि मैं अपने ही तरीके पर जो खुदा का बनाया हुआ है हमेशा चलता रहूँगा और अगर तुम इस ज़िन्दगी के तरीके और इबादत के निज़ाम को नहीं मानते और जिसका इन्कार करने पर जमे हुए हो तो जमे रहो। मेरा काम सिर्फ़ हक़ का पैग़ाम पहुँचा देना है अगर तुम सरकशी करोगे तो इसका नतीजा खुद ही भुगतोगे। इस से साफ़ तौर पर मालूम हो गया कि इस्लामी नज़रिय-ए-इबादत तौहीद की मरकज़ियत में अल्लाह के अलावा किसी की ज़रा सी भी शिरकत

बक़िया.....पेज 14 पर

एक सबक इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहिब किब्ला ताबा सराह

पिछले शुमारे से आगे

3- "आलिम" (सर्वज्ञाता) है:- अर्थात् सभी चीज़ों से अवगत है वह किसी भी चीज़ के पैदा होने के पहले, पैदा होने के बाद या नष्ट या अस्तित्वहीन हो चुकने के बाद भी अवगत है। अर्थात् परिवर्तन ज्ञान वस्तु में होता है ज्ञाता में नहीं। ईश्वर को अपनी ज्ञात का ज्ञान है और उसकी ज्ञात (हस्ती) ही प्रत्येक विद्यमान की कारक है। प्रत्येक वस्तु उसके ही इरादे से होती है। वही प्रत्येक वस्तु के बाकी रहने का कारण है। जब प्रवर्तक का ज्ञान होता है तो अनिवार्यतः परिवर्तित का ज्ञान भी होता है उदाहरणार्थ सूरज के कारण धूप होती है जब यह ज्ञान हुआ कि सूर्य मौजूद है तो अनिवार्य रूप से यह भी मालूम हो जाएगा कि धूप भी है चाहे बादल के ओट के कारण हम तक पहुँच न रही हो।

4- हयि (जीवित) है:- कुर्आने मजीद में यह शब्द बहुत सी आयतों में आया है। "अल्लाह ही मौत देता है, अल्लाह ही ज़िन्दगी देता है मगर वह स्वयं ऐसा ज़िन्दा है जिसके लिए मृत्यु नहीं।" परन्तु उसके जीवित होने का यह अर्थ नहीं है कि हमारी भांति उसके शरीर या आत्मा है कि जब दोनों में सम्पर्क हो तो हम जीवित रहें। और सम्पर्क टूट जाए तो मुर्दा हो जाएँ उसके यहाँ ज़िन्दगी और मौत का अर्थ यह है कि वह ज्ञाता और शक्तिमान है और जो ज्ञाता और शक्तिमान हो उसको ज़िन्दा कहा जाता है। अतः वह भी जीवित है (इस विशेषता का अलग से वर्णन ही

इसलिए किया जाता है कि लफ़ज़ "हयि" से कोई धोखे में न पड़ जाए और अल्लाह के लिए भी शरीर और आत्मा न समझ बैठे।)

5- "मुरीद" (इरादे वाला या संकल्प वाला):- कार्य दो प्रकार के होते हैं। एक विवशतावश एक स्वेच्छापूर्ण। विवशतावश कार्य वह है जिसके न करने की शक्ति न हो। जैसे आग की ताप और हिम की शीत। स्वेच्छा पूर्ण कार्य वह है जिसके करने या न करने दोनों की शक्ति हो जैसे लिखना या बोलना। 'मुरीद' का अर्थ यह है कि अल्लाह के कार्य आग की ताप की तरह नहीं जिसमें इरादे को कोई दखल न हो। बल्कि यथा अवसर जो बात वह उपयुक्त समझता है वह करता है। कुछ बातों को ज्ञान इंद्रियों से होता है जैसे गर्मी या ठण्डक या किसी वस्तु की नमी या सख्ती को छू के अनुभूत किया जा सकता है। या रंगों को देख के, आवाज़ों को सुनके महसूस करते हैं। अल्लाह के लिए यह इंद्रियाँ तो नहीं हैं। न वह छूता है। न उसके आँखें, कान, नाक और जिह्वा है। अतः कोई यह सोच सकता है चूँकि अनुभूति के ज्ञान का माध्यम इंद्रियाँ हैं। और यह इंद्रियाँ अल्लाह के लिए नहीं हैं तो उसका ज्ञान भी न होता होगा। इस शंका का समाधान यह है कि चूँकि अल्लाह प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष सबका ज्ञाता है। और उसका ज्ञान सभी वस्तुओं को घेरे हुए है। अतः उसे इन चीज़ों का भी ज्ञान है। बस अन्तर यह है कि हम माध्यम और उपकरणों के मुहताज हैं और अल्लाह इनका मुहताज नहीं। जैसा कि कुर्आन में आया है। "निगाहें उसे नहीं

पातीं परन्तु वह निगाहों को पा लेता है। वह अति सूक्ष्मदर्शी और ख़बर रखने वाला है।”

(सूर:-6 आयत-104)

7- “मुतकल्लिम” (वक्ता):- उसकी वक्तृता हमारे समान नहीं उसने मानव के दिग्दर्शन हेतु किताबें भेजीं। अपनी इच्छा और उद्देश्य से पैग़म्बरों को अवगत किया और इसके लिए वही साधन अपनाये जिनसे एक मनुष्य दूसरे का मतलब समझ सकता है। अल्लाह ने भी अक्षरों और शब्दों के द्वारा अपना उद्देश्य हम तक पहुँचाया। उसके “मुतकल्लिम” होने का यही अर्थ है। ऐसा नहीं है कि हमारे ही समान उसकी हस्ती में भी आवाज़ कायम हो। उसके “मुतकल्लिम” होने का अर्थ यह है कि जिस वस्तु में भी चाहता है अपनी इच्छा या संकल्प से वाणी पैदा कर देता है।

8- “सादिक्” (सत्यवक्ता):- अल्लाह मुतकल्लिम है। लेकिन वाक् दो प्रकार का होता है। एक सच्चा और एक झूठा। अल्लाह के वाक् में असत्य और झूठ की गुन्जाइश नहीं। क्योंकि झूठ या तो अज्ञान और मूर्खता के कारण बोला जाता है। या किसी मजबूरी वश। अल्लाह सर्वज्ञाता भी है सर्वशक्तिमान भी। उसके विषय में न तो अज्ञान की कल्पना की जा सकती है, क्योंकि यह उसके सर्वज्ञाता होने के विपरीत है। और न मुहताज होने की, क्योंकि यह उसकी शक्ति के विपरीत है। अतः ईश्वर के लिए असत्य सम्भव नहीं।

सिफ़ाते सलबिया

1- उसका कोई “शरीक” नहीं है। तौहीद यानी अल्लाह का एक होना ऐसा यथार्थ है जिसको कोई ऐसा समझदार जो अल्लाह को मानता है नकार नहीं सकता अब यह प्रकरण इतना उज्ज्वलित हो गया है कि जिन धर्मों में अद्वैतवाद की मिलावट भी है वह भी अपने को ऐन-केन प्रकारेण एकेश्वरवादी

सिद्ध करना चाहते हैं। एकेश्वरवाद को सिद्ध करने के लिए निम्न संकेत किये जाते हैं।

1- पूरी सृष्टि की व्यवस्था की एक रंगी साक्षी है कि स्रष्टा एक ही है।

2- किस बात से हमें अल्लाह का वजूद मानने पर विवश किया। वह यही तो है कि सृष्टि का अस्तित्व बताता है कि स्रष्टा का अस्तित्व आवश्यक है। तो फिर एक स्रष्टा मान लेने के बज़द किसी अन्य स्रष्टा के लिए कोई तर्क नहीं बचता।

3- अल्लाह अपने अस्तित्व में किसी को मुहताज नहीं। क्योंकि मुहताज होगा तो सम्भाव्य हो जाएगा और इसके लिए किसी और खुदा की आवश्यकता होगी। अगर दो अल्लाह मान लें तो आवश्यक होगा कि इनके दो अंश भी माने। एक वह समान अंश जिसके कारण दोनों अल्लाह हैं और एक वह अंश जिसके कारण दो हुए। जैसे करीम और ख़ालिद दो मनुष्य हैं। यह मानव होने के नाते मानवता इनका समान अंश है। लेकिन रंग रूह और आकार प्रकार के हिसाब से अलग-अलग है। जब दो खुदा होंगे तो कम से कम दो अंश दोनों में अवश्य होंगे। एक वह समान अंश जिनके कारण दोनों को अल्लाह कहा जाए। दूसरा वह अंश जिसके आधार पर दो अलग हस्तियाँ हुईं। अतएव दोनों ईश्वर दो अंशों से यौगिक हुए। दोनों अपने अस्तित्व में मुहताज हो गये और अल्लाह न रहे।

आज अगरचे अधिकांश लोग अपने को एकेश्वरवादी कहते हैं। परन्तु इस्लाम की विशिष्टता यह है कि यह न तो ईश्वर की ज़ात (हस्ती) में किसी को शरीक कहता है और न विशेषताओं और गुणों में। और इस्लाम में अल्लाह के अलावा किसी अन्य की उपासना और पूजन की अनुमति नहीं है।

(जारी)

इमाम अली रिज़ा (अ०)

जनाब अब्दुल अली साहब

मदीने की मुक़द्दस सरज़मीन पर तक़रीबन 1300 साल पहले 11 जीकादा 148 हिजरी को खुदावन्दे आलम ने हज़रत मूसा बिन जाफ़र (अ०) और जनाबे “तक़तुम” को (जिन्हें ताहिरा के नाम से पुकारा जाता था) एक मुबारक व मसऊद बेटा अता फरमाया। जिनका नाम “अली” रखा गया। वही बाद में “रिज़ा” के लक़ब से मशहूर हुए।

क़ैदख़ाने में बुजुर्ग बाप के शहीद कर दिये जाने के बाद तक़रीबन 35 साल की उम्र में इस्लाम की हिफाज़त और उम्मत की इमामत की ज़िम्मेदारियाँ आपके कांधों पर आ गयीं। आपका मुस्तक़िल क़याम तो मदीने में ही था, लेकिन ज़िम्मेदारियाँ की वजह से कभी-कभी मक्का, इराक़ और ईरान वग़ैरा भी तशरीफ़ ले जाते थे।

आपकी मुद्दते इमामत तक़रीबन 20 साल है जिसे तीन हिस्सों में तक़सीम किया जा सकता है:

- 1— दस साल हारून रशीद की ख़िलाफ़त के ज़माने में गुज़रे।

- 2— 5 साल हारून रशीद के बड़े लड़के “अमीन” की हुकूमत के ज़माने में गुज़रे।

- 3— और आख़िर के 5 साल मामून रशीद की हुकूमत में गुज़रे।

इमामे रिज़ा (अ०) ने इस तमाम अरसे में मौजूदा हुकूमत की पेचीदा सियासत और दोगली पालीसियों के बावजूद अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। हुकूमत के ज़रिए हाथ आने वाली कुदरत व ताक़त ने हुक्काम को मगरूर बना दिया था वह लोग सिर्फ़ अपनी रियासत व हुकूमत और ख़ानदानी फाएदे की हिफाज़त में लगे रहते थे और उनकी ग़फ़लतों

की वजह से क़रीब था कि उम्मत इस्लामी का शीराज़ा बिखर जाए। इस दौरान अकेले आइम्म-ए-अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम ही थे जो इस्लामी तालीमात को ज़िन्दा रखने के लिए कोशिश करते रहे। और इनकी तालीमात जिहालत के घटाटोप अंधेरों में हिदायत का ऐसा चिराग़ बन गयीं जिससे अपने पराए सभी ने फाएदा उठाया।

आप (अ०) की तालीमात के मुताबिक़ इंसान को खुदा की बन्दगी के अलावा हर तरह की बन्दगी से आज़ाद रहना चाहिए। क्योंकि खुदा की बन्दगी ही इंसान के लिए इज़्ज़त और कुदरत वाली है। और समाज के हर फ़र्द को अकेले और एक साथ होने वाली बराबरी और इंसफ़ की रियायत से बराबरी और भाईचारे की फ़िज़ा काएम करने, और इंसानी फ़लाह व कामियाबी के लिए हर मुमकिन मदद करनी चाहिए।

इमाम अलैहिस्सलाम की पूरी उम्र ख़ास तौर से आख़िर के 3 साल लोगों को ग़फलत की नींद से जगाने और उन्हें बुनियादी मसाएल से आगाह करने में गुज़ारी। हुकूमते वक़्त की साज़िशों के मुक़ाबले में आपकी पाक ज़िन्दगी और ज़िन्दगी का तरीक़ा ऐसी ख़ूबियों वाला है जिनका मुताला करना और उनको जानना ही बिना किसी ज़माने और जगह की क़ैद के मुसलमान को रास्ता दिखाने वाला है।

इमामे रिज़ा (अ०) ईरान क्यों तशरीफ़ लाए?

अब्बासी सिलसिले के सातवें ख़लीफ़ा और हारून रशीद के दूसरे बेटे मामून रशीद ने

आपको राजधानी “मर्व” आने की दावत दी और आपके इंकार पर बेहद इसरार और फिर धमकी देकर इस सफर पर तैयार कर लिया।

मामला यह था कि हारून ने अपने बड़े बेटे “अमीन” को खलीफा मुकर्रर किया और तैय पाया कि अमीन के बाद मामून को ख़िलाफत मिलेगी। लेकिन हारून के मरते ही उसने ऐसा रवैया अपनाया जिससे साफ हो गया कि अमीन अपने बाद मामून को खलीफा न बनाकर इस मन्सब को अपने ननिहाल के हवाले कर देना चाहता है, क्योंकि वह खुद जुबैदा अब्बासी का बेटा था। जबकि मामून माँ की तरफ से न तो अरब ही था और न ही बनी हाशिम से कोई नसबी ताल्लुक रखता था। ख़िलाफत के मसले की बुनियाद पर दोनों भाईयों में इख़्तेलाफ पैदा हुआ, आखिरकार दोनों के हिमायती लश्करों में घमासान की जंग हुई और “अमीन” मारा गया। नतीजा यह हुआ कि ईरानियों की हिमायत के साए में मामून को ख़िलाफत के दर्जे तक पहुँचने में कामियाबी हासिल हो गई।

मामून की सियासत

मामून रशीद बाप की ज़िन्दगी ही में उसकी तरफ से खुरासान का हाकिम था। बड़े भाई से जंग और उसके क़त्ल के बाद मामून ने बग़दाद के बजाए “मर्व” को अपनी राजधानी बना लिया।

मामून अपने हामियों के मन्सूबे से ख़िलाफत की फ़िज़ा अपने हक़ में बनाने के बाद इस बात की तरफ ध्यान देने लगा कि सिर्फ़ ख़िलाफत पर क़ब्ज़ा जमा लेना ही काफी नहीं है। बल्कि इसका अच्छे तरीक़े से इन्तिज़ाम करना भी ज़रूरी है और इस काम के लिए एक बुनियादी हिमायत चाहिए।

इन दो बातों ने उसके ज़हन में घर कर लिया। वह जानता था कि:

एक तो यह कि हुकूमत का निज़ाम, तमाम मुश्किलों को हल करने वाले एक अहम इल्मी और रुहानी रुक्न से महरूम है, और दरबार से ताल्लुक रखने वाले खुशामदी और चापलूस उलमा के ज़रिए इस कमी को पूरा नहीं किया जा सकता, क्योंकि इनमें इसकी सलाहियत ही नहीं पाई जाती।

और दूसरे यह कि मौजूदा हालात में इस्लामी समाज आम तौर से अक़लमन्द तबक़ा ख़ासकर औलादे अली (अ0) का हामी था और इसका ध्यान ख़ास तौर से “अली बिन मूसा रिज़ा” (अ0) की तरफ था। जिन्होंने अपने बुजुर्ग बाप की शहादत के बाद समाज में 15 साल एक ख़ास अन्दाज़ से गुज़ारे थे। और दिलों में ख़ास जगह और इल्मी व रुहानी हुकूमत पा ली थी।

अलबत्ता हुकूमत को यह मालूम था कि इमामे रिज़ा (अ0) पुर फरेबी लफ़्ज़ों, सतही तकल्लुफात और ओहदे की पेशकश से धोका खाने वाले नहीं हैं। लेकिन मामून की निगाह में हुकूमत में पैदा होने वाले फ़साद पर काबू पाने के लिए या कम से कम अपनी करतूतों पर पर्दा डालने का इससे बेहतर कोई दूसरा रास्ता नहीं था।

दावत के मुक़द्दमे

ईरानी क़ौम अब्बासी खुलफा से तंग आ चुकी थी और यह नफरत हुक्काम की कज रफ्तारी और तरह-तरह की बेहूदगियों की वजह से पैदा हुई थी, जिसमें से दो चार बतौर नमूने के ज़िक्र की जाती हैं:-

□ अबुमुस्लिम खुरासानी का मन्सूर दवानकी के हुक्म से क़त्ल, जबकि अबुमुस्लिम ने अब्बासी ख़िलाफत के क़याम में सबसे ज़्यादा मदद दी थी।

- ☐ बरमकी ख़ानदान को बर्बाद कर देना।
 - ☐ शीओं के सातवें इमाम, हज़रत मूसा बिन जाफ़र (अ0) की उम्र कैद और कैदख़ाने ही में उनकी शहादत।
 - ☐ अब्बासियों का ज़ालिमाना रवैया और समाज के साथ हाकिमाना बर्ताव।
 - ☐ अपने खुशामदियों और रिश्तेदारों को दूसरों पर मुसल्लत करना।
 - ☐ हुक्काम की अय्याशी और फुजूलख़र्वी।
- यह तमाम बेहूदगियाँ एक तरफ और ईरानियों का मज़हबे तशैय्युअ और अइम्म-ए-अहलेबैत (अ0) के साथ जुड़े रहना जिसकी वजह से वह हमेशा हुक्मत के जुल्मों का निशाना बने रहे। एक तरफ़ इनहीं तमाम मुश्किलों को दूर करने और भरोसे का माहोल काएम करने के लिए हज़रत (अ0) को वतन छोड़ने पर मजबूर कर दिया गया।

मामून की दावत और इमाम (अ0) का रद्देअमल

इमामे रिज़ा (अ0) ने दावत तुकरा के मामून और उसके खुशामदियों को समझा दिया कि आप उनके दिली मक़ासिद और छुपी हुई साज़िशों की ख़बर रखते हैं।

ज़ाहिर है यह बात इतनी आसान नहीं थी कि इमाम के इन्कार कर देने से मामला ख़त्म हो जाता। आपके इन्कार और उज़्र पेश करने के साथ उनका इसरार बढ़ता गया और फिर आप मजबूरन मदीने से मर्व की तरफ़ निकलने के लिए तैयार हो गए। और मक्का व इराक़ के रास्ते से ख़ुरासान का रुख़ किया।

सफ़र के तौर तरीक़े और सामान में भी हुक्मत ने आपके तक़वे और पारसाई को चोट

देने के लिए बहुत ही आला और कीमती सवारियों का एहतेमाम किया। इमाम के साथ मदीने के वाली, हुक्काम और हुक्मत के सरदार थे। आपने अपने घर के किसी भी फ़र्द को अपने साथ नहीं लिया। यहाँ तक कि अपने इकलौते बेटे इमामे जवाद (अ0) को भी मदीने में छोड़ा और खुदा का नाम लेकर अकेले निकल पड़े।

हिजाज़ से ख़ुरासान तक

इमाम (अ0) हिजाज़ से बसरा तक हर शहर में लोगों से मिलते और उनसे बातचीत करते रहे। बसरा से ख़ुर्रम शहर तक दरिया के रास्ते सफ़र किया और फिर ख़ुर्रम शहर से अहवाज़, अराक, रैय और नीशापुर तशरीफ़ लाए और आख़िरकार 10 शव्वाल 201 हि0 को मर्व पहुँच गए।

मुख़्तलिफ़ तबकों ने आपके आने को ग़नीमत जानते हुए अपने मसलों के हल सीधे आपसे मालूम किये और पैग़म्बर के इल्म व तक़वे के अकेले वारिस से ज़्यादा से ज़्यादा फाएदा उठाना चाहा जिन तक पहुँचना और उनसे फाएदा उठाना अब तक मुहय्या नहीं था।

शहरे नीशापुर में इमाम (अ0) की बातचीत

शहरे नीशापुर को एक ख़ास इल्मी मरकज़ियत हासिल थी, लोगों का शौक़ और ख़ासकर इस शहर के उलमा का सख़्त इसरार और इन हालात में इमाम (अ0) का इस्लामी तौहीद को बयान फरमाना और उसी को नजात का रास्ता क़रार देकर इसके हासिल करने की शर्तों का बयान करना वाक़ई एक ग़ौर करने वाला क़दम है।

आपकी सादा, साफ़-सुथरी और असरदार

शख़सियत लोगों के सामने थी, और लोग आप (अ0) के बयान सुनने के लिए बहुत ही बेचैन थे। चेहरों से शौक फूट रहा था। दो शरीफ़ लोगों ने बुलन्द आवाज़ में होशियार किया कि लोगो! ख़ामोश हो जाओ, इमाम (अ0) कुछ कहना चाहते हैं।

सब चुप हो गए।

सिर्फ़ इमाम (अ0) की एक आवाज़ सुनाई दे रही थी, आप “सिलसिलतुज्ज़हब” के नाम से मशहूर होने वाली हदीस बयान फरमा रहे थे।

हज़रत ने बयान फरमाया कि मैंने अपने बुजुर्ग बाप, नेक बन्दे मूसा बिन जाफर (अ0) से सुना कि फरमाया:

मैंने अपने बुजुर्ग बाप जाफर बिन मुहम्मद (अ0) से सुना कि फरमाते हैं:

मैंने अपने बाबा मुहम्मद बिन अली से सुना कि उन्होंने फरमाया:

मैंने अपने बाप अली बिन हुसैन (अ0) से सुना कि आपने फरमाया:

मैंने अपने बुजुर्ग बाप हुसैन बिन अली (अ0) से सुना कि आपने नक़ल किया:

मैंने अपने बाप अमीरुलमोमिनीन अली बिन अबी तालिब (अ0) की ज़बानी सुना कि फरमाया:

मैंने हज़रत रसूल (स0) से सुना कि आपने फरमाया:

मेरे पास अमीने वही जिबरईल (अ0) आए और उन्होंने कहा:

मैंने खुदावन्दे आलम से यह कलमात सुने हैं कि फरमाता है:

“अल्लाह के अलावा कोई खुदा नहीं” का अक़ीदा, मेरा मज़बूत क़िला है। जिसने मेरे इस क़िले में पनाह ले ली वह मेरे अज़ाब से बच गया।”

इमाम (अ0) ने नीशापुर वालों, ख़ास तौर से वहाँ के उलमा और बुजुर्ग लोगों की ख़्वाहिश

पर ऐसी हदीस बयान फरमाई जो उनकी ज़िन्दगी की राह को रौशन कर दे।

इमाम (अ0) ने तौहीदे इस्लामी के बारे में जुबान खोली और एक खूबसूरत और जामे मुक़द्दमे के बाद हदीसे तौहीद बयान फरमाई ताकि रहबरी के लेहाज़ से अपनी हकीकी मामूरियत को अदा करते हुए बुनियादी मसला हल करें, न कि नसीहत के उनवान से कोई बात कह कर गुज़र जाएँ। आपने हदीसे तौहीद को खुदावन्दे मुतआल की ज़बानी नक़ल किया जो आलमीन का ख़ालिफ़ है।

ऐसी तौहीद जो तमाम लोगों और क़ौमों को हर तरह की बुराईयों और अज़ाब से नजात दिलाती है, और जिस से दूरी दोनों ज़हान में हर तरह की गिरफ़्तारियों, सख़्तियों और परेशानियों की वजह बनती है।

अलबत्ता जिस तौहीद को इस्लाम ने पेश किया और सिर्फ़ उसी को कामियाबी व भलाई का ज़रिआ बताया है उसे याद दिलाया।

हदीस के बयान के बाद जब काफ़ला चलने लगा तो आपने सवारी से सर निकाल कर फरमाया “लेकिन उसकी कुछ शर्तें हैं” और फिर अपनी तरफ़ इशारा करते हुए फरमाया: “और मैं उन्हीं शर्तों में से हूँ” इमाम (अ0) ने मतने हदीस और अपनी तफ़सीर के बीच फासला काएम किया और अपने तफ़सीरी कलमा (लेकिन उसकी शर्तों के साथ.....और मैं उन्हीं शर्तों में से हूँ) से इस अहम मसले की तरफ़ इशारा फरमाया कि हकीकी मानों में विलायत ही तौहीद को मुकम्मल करती है। यानी अगर मुस्लिम समाज में हाशियार और बराबरी वाली रहबरी का मसला हल न होगा तो फिर यगाना परस्ती का अक़ीदा भी मज़बूत नहीं हो सकता और तागूत मक़ामे खुदा पर कब्ज़ा जमाए अपना हुक्म चलाते रहेंगे।



“औरतों से बहुत ज़्यादा भलाइयाँ करो।”

(इमाम जाफर सादिक अ०)

इतिहास और इस्लाम में औरत की हैसियत

(पिछले शुमारे से आगे)

औरत की प्रति बहके हुए इन्सान का टेढ़ा बर्ताव

आसमानी किताबों और नबियों की पाक वाणी से पहुँचे हुए खुदाई क़ानून से जो समाज अपने घमण्ड और शेखी की वजह से कटे रहे उनकी सोच टेढ़ी हो गई और वे दुनिया और दुनिया के लोगों के बारे में सही फैसला न कर पाए। उन्होंने सारी बातें सच्चाई के खिलाफ ही कीं। इसी फैसले के हिसाब से उन्होंने ज़िन्दगी बिताई। इस तरह वे अपने और दूसरों पर बड़ा जुल्म (अनर्थ) करते रहे। इतिहास ने भी उनकी ज़िन्दगी के भयानक और गन्दे चित्र बना दिये।

औरत के बारे में भी उन्होंने कुछ ऐसे ही सोच बनाई। उनका यह फैसला सच और सच्चाई से दूर और मानवता के खिलाफ रहा।

मैंने पूरब पच्छिम में लिखी जाने वाली किताब को पढ़कर यह नतीजा निकाला है कि जिन समाजों ने खुदा से नाता तोड़ लिया और वहि (खुदा की वाणी) से मुँह मोड़ लिया वे अपनी हवा में बह गये और ग़लत विचारों में डुबकियाँ खा रहे हैं। उन्होंने औरतों के बारे में अनर्थ फैसले कर डाले और तर्क बुद्धि से बहुत दूर की बातें गढ़ लीं।

1— औरत 100% कमज़ोर और दुर्बल है।

हुज्जतुल इस्लाम प्र० हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु० र० आबिद

इसलिए औरत को हर तरह मर्द के पीछे चलना चाहिए। उसके सामने क्यों, क्या और कैसे की बात नहीं करना चाहिए। उसे किसी काम में यहाँ तक कि घर के काम में अपनी टाँग अड़ाना नहीं चाहिए।

2— औरत में शैतान की रूह, राक्षस की आत्मा है। इसलिए यह इन्सान नहीं है, मानवता के बाहर है। अगर उसे कुछ कहा जा सकता है तो यही कि वह इन्सान और जानवर की बीच की कोई चीज़ है। इस तरह न उसका कोई मान है और न ही कोई कीमत।

3— वह ऐसी चीज़ों की मालिक नहीं बन सकती जिसका कोई मालिक हो सकता है। मर्द अगर चाहे तभी वह मालिक हो सकती है। अपनी मनमानी नहीं कर सकती।

4— उसे किसी भी चीज़ का वारिस नहीं बनाया जा सकता। वह किसी की उत्तराधिकारी नहीं हो सकती। बल्कि वह खुद एक छोड़ी हुई चीज़ है जो बाप या पति के मरने के बाद किसी दूसरे के हिस्से में चली जायगी।

5— उसे पूजा-पाठ, इबादत के ठिकानों पर पैर भी रखने का हक़ नहीं है। उसकी इबादत का कोई भाव नहीं। उसे कोई पुण्य सवाब मिलने का नहीं क्योंकि वह अक़ल की कम है और माया है।

6— उसके बाप बेटे और उसके बीच सिर्फ

खून का रिश्ता है और बस। और कोई हक या सम्बन्ध की बात नहीं कर सकती।

7— शादी के बाद उसके बेटे उसके बाप की औलाद (नाना की सन्तान) नहीं कहलाए जा सकते जबकि बेटे के बेटे दादा की औलाद कहलाए जाते हैं।

8— मरने में भी दोनों में अन्तर है। मर्द मरने के बाद अमर हो जाता है पर औरत मरने के बाद मिट जाने वाली है।

9— वह ऐसी चीज़ है जिसे किसी दूसरी चीज़ की तरह मर्द इस्तेमाल कर सकता है। उसे कर्ज़ में दे सकता है, उसे किराये पर उठा सकता है, किसी को भेंट में दे सकता है, उसे बेच सकता

है, घर से निकाल सकता है, यहाँ तक कि उसे मार भी सकता है।

10— वह सेक्स लूटने का माध्यम है। वह मर्द की मौज-मस्ती के लिए पैदा की गयी है। उससे मज़ा लेने में मर्द किसी भी क़ानून को नहीं मानता।

इस सम्बन्ध में यूरोप और अमरीका वाले लोग नबियों को छोड़कर बीच के सही रास्ते से भटक गए। पच्छिम में औरत सिनेमा, टी0वी0, रेडियो, अख़बार, मैगज़ीन और सैर तफरीह के लिए रह गयी ताकि वह ज़्यादा से ज़्यादा ग्राहक खींच सके क्योंकि जंगली सेक्स के अड़्डे माल, पैसे के भट्ठे हैं।

(जारी)

बक़िया..... इबादत व अख़लाक़

की गुन्जाइश नहीं रखता इस नज़रिये-ए-इबादत का आला नमूना और मिसाल हज़रत ख़ातमुल मुर्सलीन की सीरते पाक थी और चूँकि नज़रिये की अमली शक़ल का नाम “अख़लाक़” है इसी लिए आप (स0) अख़लाक़ की उस मंज़िल पर पहुँचे हुए थे जहाँ पर काएनात की कोई दूसरी हस्ती नज़र नहीं आती।

“और तुम्हारे लिए यकीनन वह बदला है जो कभी ख़त्म ही न होगा और बेशक तुम्हारे अख़लाक़ ऊँचे हैं।” (सूरे क़लम आयत: 3-4)

इबादत के नज़रिये की बुलन्दी का अक्स इंसानी अख़लाक़ पर पड़ना ज़रूरी है। नज़रियात ही आदतों खुसूसियतों और अमली खूबियों और अख़लाक़ की पैदाईश का ज़रिया बनते हैं। इसलिए अख़लाक़ को मुकम्मल करने के लिए इबादत के

नज़रिये को मुकम्मल करना ज़रूरी है। हम तमाम तौहीद परस्तों के लिए इबादत का नज़रिया और अख़लाक़ की तश्कील के मामले में हज़रत ख़ातमुल मुर्सलीन (स0) से बड़ी कोई मिसाल नहीं है इसलिए हमें चाहिए कि हम आपकी सीरते पाक को हर वक़्त अपने सामने रखें और उसी मुक़द्दस सीरत के मुताबिक़ अपने अख़लाक़ व किरदार की तामीर करें ताकि हम सच्चे मुसलमान बन सकें। कुर्आने करीम का इरशाद है: मुसलमानों! तुम्हारे लिए तो खुद रसूल (स0) की ज़ात में एक अच्छा नमूना मौजूद है मगर हाँ यह उस शख्स के लिए है जो खुदा और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता हो और बहुत ज़्यादा खुदा का ज़िक़र करता हो। खुदा हम सब को सरवरे दो आलम (स0) के नक्शेकदम पर चलने और आप (स0) की पाक सीरत पर अमल करने की तौफीक़ अता फरमाए।

□□□

इदारा

मुख्य समाचार

हज़रत अली (अ०) के यौमे शहादत पर

21 रमज़ान को सुबह सवेरे ताबूत अकीदत व एहतेराम से उठाया गया

लखनऊ। हज़रत अली (अ०) की शहादत के ग़म में निढाल नौहा व गिरया और मातम करते हुए लाखों अज़ादारों ने 21 रमज़ान को सुबह सवेरे मौलाए काएनात (अ०) का ताबूत काँधे पर उठाए हुए या अली (अ०) या अली (अ०) की सदाओं के बीच रौज़-ए-शबीहे नज़फ से जुलूस निकाला। यह जुलूस पहले से तैय रास्ते से होता हुआ कर्बला ताल कटोरा पहुँचा।

इसके पहले इक्कीसवीं शब में रात भर अकीदतमन्दों ने मज़लिसों और मातमों का सिलसिला जारी रखते हुए सुबह नमाज़े फ़ज़्र के बाद ताबूते हज़रत अली (अ०) निकाला। ताबूत के आते ही अकीदतमन्द या अली मौला (अ०) की सदाएँ बुलन्द करने लगे और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। ताबूत के आगे मर्सिया ख़्वान मर्सिया पढ़ते हुए चल रहे थे

और पीछे हज़ारों की तादाद में सोगवाराने मौलाए काएनात (अ०) ताबूत में शामिल थे। यह जुलूस रुस्तम नगर में मौजूद शबीहे नज़फ से निकल कर कर्बला दयानतुद्दौला, रौज़-ए-काज़मैन, मन्सूर नगर तिराहा होते हुए टूरियागंज चौराहे पर पहुँचा। यहाँ से बाएँ मुड़कर बाज़ार खाला और ऐशबाग होते हुए जुलूस कर्बल-ए-तालकटोरा में जाकर ख़त्म हुआ। जुलूस के साथ मौलाना कल्बे जवाद साहब के अलावा दूसरो उलमा हज़रात भी शामिल थे। तालकटोरे में मज़लिस व मातम का सिलसिला देर शाम तक चलता रहा। शहर इन्तिज़ामिया ने जुलूस की हिफाज़त का माकूल इन्तिज़ाम किया था, जुलूस के साथ बड़ी तादाद में पुलिस, आर०ए०एफ० और पी०ए०सी० की कम्पनियाँ तैनात थीं।

वन्देमातरम का गीत अंग्रेज़ों के इशारे पर मुसलमानों के खिलाफ लिखा गया, हिन्दुस्तान की आज़ादी से इसका कोई ताल्लुक नहीं: मौलाना कल्बे जवाद

लखनऊ। तारीख़ी आसफ़ी मस्जिद में काएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब ने जुमतुल विदाअ के मौक़े पर एक बड़े मजमे को सम्बोधित करते हुए दुआ और फलसफ-ए-दुआ की अहमियत बताई। और मौजूद लोगों को दुआ की तरफ रग़बत दिलते हुए कहा कि इंसान की ज़िन्दगी में दुआ की बहुत ज़्यादा अहमियत है जिसके ज़रिए से इंसान अपने हकीकी मालिक तक पहुँचकर अपनी मुश्किलों व ज़रूरतों को पूरा कर सकता है।

मौलाना ने कहा कि दुआ का सबसे बड़ा फाएदा यह है कि दुआ के ज़रिए से इंसानी फ़िक्र की तरबियत होती है क्योंकि जब फ़िक्र सही होगी तो अमल भी सही होगा। चूँकि अमल की बुनियाद इंसान की फ़िक्र पर है कि जिसकी जैसी फ़िक्र होती है उससे वैसा ही अमल सामने आता है।

आख़िर में मौलाना ने वन्देमातरम के मसले पर रौशनी डालते हुए कहा कि इस तराने का ख़ालिक अंग्रेज़ों का पिटू बंकम चटर्जी है जो कि उस ज़माने में अंग्रेज़ों का नौकर था, जिसने अंग्रेज़ों के इशारे पर सिराजुद्दौला और मुसलमानों के खिलाफ आनंद मठ में यह गीत लिखा था।

उन्होंने कहा कि इसके अलावा जुल्म यह कि जो गीत मुसलमानों के खिलाफ लिखा गया, कुछ फिरकापरस्त ताक़तें मुसलमानों से यही गीत गाने पर ज़ोर डाल रही हैं। इसका मतलब यह है कि इसकी तरफदारी करने वाले फिरकापरस्तों का लिन्क और ताल्लुक अभी तक अंग्रेज़ों से है और यह उनके एजेण्ट के तौर पर काम कर रहे हैं।

नमाज़ के बाद बड़े इमामबाड़े के मैदान में एक जलसा करके जुमतुल विदाअ को “यौमुल कुदस” और “जश्ने फत्हे हिज़्बुल्लाह” के तौर पर मनाते हुए जहाँ अपने क़िब्ल-ए-अव्वल की आज़ादी के लिए दुआ की गई वहीं अमरीका और इस्राईल के खिलाफ ज़बरदस्त विरोध प्रकट किया गया। जलसे को मौलाना मुहम्मद मियाँ आबदी साहब ने सम्बोधित किया इसके बाद मौलाना कल्बे जवाद साहब ने सम्बोधित करते हुए इत्तेहाद पर ज़ोर दिया कि आज तीन हज़ार लोगों वाले एक इलाही गिरोह “हिज़्बुल्लाह” जिसने सुपरपावर अमरीका की मदद वाले इस्राईल को शिकस्त देकर बता दिया कि देखो तीन हज़ार खुदापरस्तों का यह आलम है तो अगर दुनिया भर के मुसलमान एक हो जाएँ तो क्या नहीं कर सकते।

ईरान ने अमरीका को मुँहतोड़ जवाब दिया

ईरान आने वाले अमरीकी शहरियों के फिंगर प्रिंट लिए जाएँगे

तेहरान। अमरीका ने जिस तरह दुनिया भरके और खास तौर पर मुस्लिम मुल्कों के शहरियों का मज़ाक उड़ाने का सिलसिला शुरू करते हुए अमरीका आने वाले तमाम विदेशियों के फिंगर प्रिंट उतारने को ज़रूरी करार दिया है, इसका मुँहतोड़ जवाब देते हुए ईरान ने भी अमरीकी शहरियों के फिंगर प्रिंट उतारने की तजवीज़ रखी है। ईरानी पार्लियामेंट में एक बिल पेश किया गया है जिस पर बहस के बाद अगर क़ानून बन गया तो फिर ईरान आने वाले तमाम अमरीकी शहरियों को फिंगर प्रिंट देना ज़रूरी हो जाएगा। अगले कुछ दिनों में ईरानी पार्लियामेंट में इस बिल पर वोटिंग होगी।

जिसमें कहा गया है कि "तमाम अमरीकी शहरियों को (जो ईरान आएँगे) निगरानी में रखा जाएगा और जब वह ईरान में दाख़िल हों तो उनके डिजिटल फिंगर प्रिंट लिये जाएँ।" यह बिल ईरानी मिम्बर ऑफ़ पार्लियामेंट काज़िम जलाली ने पेश किया है। उन्होंने कहा कि यह क़ानून उस अमरीकी क़ानून का जवाब है जिसके तहत तमाम ईरानी पासपोर्टों में सियासी अफसरों और शहरियों के फिंगर प्रिंट की लाज़मी शर्त रखी गई है और यह शर्त बहुत ही मज़ाकिया लगती है। तेहरान में अब तक सिर्फ़ अमरीकी सहाफियों के डिजिटल फिंगर प्रिंट लिये जाते थे।

तवाशीहे बज़्मे कुर्आन

लखनऊ। एक रुहानी बज़्मे कुर्आने पुर नूर नूरे हिदायत फाउण्डेशन व ईरानी कल्चर हाउस की तरफ से ज़ेरे सरपरस्ती काएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद साहब किब्ला मुनअकिद हुई। जिसमें इस्लामी मुल्कों के तरीके पर क़िराअते कुर्आन के साथ नात व मनक़बत ख़ानी का मुज़ाहेरा ईरान से तश्रीफ़ लाए आलमी शोहरतयापता कारियाने कुर्आन मुहम्मद महदी, अफ़ूरियान, महदी रिज़ाई, हादी रिज़ाई, मेहर महदी मशहदी ने पेश किया।

हुज्जतुल इस्लाम मौलाना सै० हसन रब्बानी ने कुर्आने मजीद और रमज़ान के मुबारक महीने की फज़ीलत पर रौशनी डालते हुए कहा कि कुर्आन एक मोअजज़ा है और यह मोअजज़ा हज़रत मुहम्मद (स०) के नाम से जुड़ा

हुआ है। उन्होंने कहा कि जनाबे ईसा (अ०) और जनाबे मूसा (अ०) के मोअजज़े उनके ज़माने के लोगों ने ही देखे थे लेकिन कुर्आन को हर ज़माने के लोग देखेंगे। उन्होंने कहा कि कुर्आन का खुला हुआ चैलेंज है कि "अगर तुम सच्चे हो तो इसके जैसा एक सूरा बना लाओ।" कि जिसकी तरह आज तक कोई नहीं ला सका।

इस मौके पर मौलाना कल्बे जवाद साहब ने कुर्आन की फज़ीलत पर रौशनी डालते हुए कहा कि उम्मत का बेहतरीन शख्स वह है जो कुर्आन पढ़े और दूसरों को पढ़ाए। इस मौके पर मौलाना मुहम्मद मियाँ आबदी, काशी मुहम्मद यासीन, मौलाना नुसरत हुसैन साहेबान व दूसरे उलमा व मोमिनीन ने शिरकत की।

काएदे मिल्लत की सरपरस्ती और अल्लाम-ए-नक़वी की सदारत में असीफ़ जाएसी इमामिया मिशन हिन्द के ज्वाइन्ट सिक्रेटरी मुन्तख़ब

लखनऊ। अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी ने मौलाना मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी असीफ़ जाएसी एडिटर मासिक "शुआ-ए-अमल" लखनऊ की तहकीक़ पसन्दी, इल्म दोस्ती और फअआलियत को देखते हुए मौसूफ़ को हिन्दुस्तान के अज़ीम तहकीकी व इल्मी इदारे

"इमामिया मिशन" हिन्द का ज्वाइन्ट सिक्रेटरी मुन्तख़ब फरमा दिया। जाएसी साहब की लगन और दिलचस्पी से इमामिया मिशन के नश व इशाअती काम में आइन्दा तेज़ी आने की काफ़ी उम्मीद पाइ जाती है।